ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

सोशल मीडिया एवं सांस्कृतिक अस्मिता

संतोष सिंह

हिंदी प्रवक्ता, छाजू राम जाट कालेज

परिचय

हर माता पिता को पता होता है कि अपने बच्चे को कितनी चॉकलेट देनी है। यह भी पता होता है कि बच्चा चॉकलेट पाकर इतना प्रसन्न हो जाता है। माता-पिता यह अच्छे से समझते हैं कि यदि बच्चे को ज्यादा चॉकलेट देंगे तो या तो उसके दांतों में कीड़ा लग जाएगा या फिर पेट में भी खराब हो जाएगी। लेकिन बीच-बीच में मन बहलाने के लिए उत्साह बनाए रखने के लिए क्योंकि उसे चॉकलेट पसंद है ,तो उतनी ही देते हैं जितनी खाने से उसके स्वास्थ्य पर असर ना हो। इन सब बातों को कहने का तात्पर्य मेरा यह है कि सोशल मीडिया चॉकलेट है ,और हम सब बच्चे हैं। हमारी बुद्धि हमारे माता पिता हैं। तो कुल मिलाकर सोशल मीडिया मनोरंजन के लिए , ज्ञान बढ़ाने के लिए , अकेला पन दूर करने के लिए , अपने हुनर का प्रचार-प्रसार करने के लिए , विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए ,दूरियाँ कम करने के लिए ,आसानी से मेल जोड़ बढ़ाने के लिए, अपने मन की बात एक साथ कई लोगों के साथ साझा करने के लिए, बहुत अच्छा माध्यम है। किसी भी देश की , दूर दराज की कोई भी घटना , दुर्घटना मिनटों में हमारे पास पहुँच जाती है , अपने किसी परिवार के सदस्य , रिश्तेदार की जानकारी सुलभ हो जाती है।

भूमिका

अब रही बात इसके ज्यादा इस्तेमाल की ,तो इसके दुष्प्रभाव भी हैं चॉकलेट की ही तरह। जिस प्रकार आज सामाजिक परिवेश बदल रहा है और विभिन्न साइट्स पर सारी उस तरह की जानकारियाँ और वीडियोस उपलब्ध हैं जो बच्चों के लिए किसी भी कीमत पर देखने योग्य नहीं हैं। उनकी मानसिकता पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ जाता है और वे अपने रास्ते से भटक सकते हैं। जहाँ तक बच्चियों का सवाल है उनके प्रोफाइल से फोटो चुराकर गलत इस्तेमाल हो जाता है। कुछ स्वच्छंदता, आजादी आज की पीढ़ी में इस कदर है, कि बोलचाल की भाषा में गजब का परिवर्तन देखा जाता है। गाली गलौज के बगैर उनकी कोई बात नहीं होती है , किसी के लिए अपशब्द बड़ी सहजता से बोल डालते हैं।

सोशल मीडिया और सांस्कृतिक अस्मिता

हमारे पास आने वाली फ्रेंड रिक्वेस्ट के लिए अक्सर सिर्फ इतना ही समय होता है कि यह देख पाऊँ कि उस व्यक्ति की कोई साहित्यिक रुचि हो तो ही एक्सेप्ट करूँ, वह फ्रेंड रिक्वेस्ट शायद किसी बच्चे की थी ,जो उम्र में काफी छोटा था। अनायास ही पूरी प्रोफाइल चेक करने पर देखा कि वह अपने मित्रों से किस प्रकार चैटिंग करता है ,वह भाषा इतनी ज्यादा अभद्र थी कि उसका विवरण नहीं दिया जा सकता, खैर फ्रेंड रिक्वेस्ट तो डिलीट कर दी। पर मन में बात यह हमेशा के लिए रह गई कि आज युवा पीढ़ी किस ओर जा रही है। चिंतनीय है। सभी का दायित्व है ,समाज की ,देश की अस्मिता बचाने का ,नैतिक पतन को सही राह दिखाने का।बहुत प्रयास करने होंगे। आज हम वैज्ञानिक तरक्की तो बहुत कर रहे हैं लेकिन क्या इसकी कीमत बहुत ज्यादा नहीं चुका रहे हैं?

माना कि आज विद्यार्थियों को, उनके माता-पिता को, कोई भी जानकारी ,किसी भी क्षेत्र की ,किसी भी विषय की, एक बटन दबाते ही उपलब्ध हो जाती है ,और उनकी शंका का समाधान हो जाता है। परियोजना कार्य बनाने में सोशल मीडिया के विभिन्न साइट्स बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लेकिन क्या कोई ऐसा कंट्रोल है जिससे की अश्लील ,असमाजिक ,अभद्र साइट्स को रोका जा सके। युवा वर्ग कच्ची उमर में बहुत जल्दी प्रभावित तो जाते हैं। इसे सांस्कृतिक पतन ही कहा जाएगा। देवताओं की इस भूमि में आज इस कदर अनाचार बढ़े हैं कि, उन्हें रोकने के लिए ठोस कदम उठाने ही होंगे। घर की मर्यादा नीलाम की जा रही है। कुछ लोगों की नासमझी और फैशन तथा शौक में इस कदर डूब जाना, कि कौन से चित्र सोशल मीडिया पर डालने चाहिए कौन से नहीं ,इसका भी अंतर नहीं कर पाते हैं। घूमने जाएँ, खाना खाने जाएँ, बाहर बच्चे का जन्मदिन मनाएँ, कोई और पार्टी मनाएँ ,सारे के सारे फोटो सैकड़ों में अपलोड कर दिए जाते हैं। यह दिखाकर आदमी क्या सोचता है कि उसे वास्तविक खुशी मिल रही है। लोगों को नकली चेहरा दिखाता है इंसान ,क्या फायदा बाहर लोगों को नकली खुशी दिखाकर अपने घर में कलह मचाएँ, मनमुटाव रखें ,रिश्ते तोड़ दें, अपने बड़ों को न पूछें, यह सब सांस्कृतिक पतन ही है। राजनीति दुष्प्रचार, सामाजिक दुष्प्रचार, सांस्कृतिक दुष्प्रचार ,धार्मिक दुष्प्रचार ,इन सब पर अंकुश लगाना बहुत जरुरी है।

आजकल जहाँ सोशल मीडिया बहुत ही सार्थक लगने लगा है तो वहीं इसके दुष्परिणाम भी बहुत सामने आ रहे हैं। चूंकि सोशल मीडिया हमें देश-विदेश से जोड़ रहा है। इसलिए हमारी संस्कृति पर विदेशी प्रभाव पड़ता जा रहा है। खास कर बच्चे और युवा वर्ग विदेशी संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं। जिससे उनके विचार, व्यवहार, पहनावे-ओढ़ावे में तेजी से बदलाव देखा जा रहा है। सोशल मीडिया पर मर्यादा विहीन शब्दों का प्रयोग ऐसे करने लगे हैं। जैसे मर्यादा का कोई महत्व ही नहीं हो।

दोष हम केवल बच्चों या युवा को नहीं दे सकते हैं, क्योंकि कई बुजुर्ग महिला या पुरुष भी सोशल मीडिया पर मर्यादा विहीन शब्दों का प्रयोग और अजीबोगरीब लिबास में अपनी तस्वीर पोस्ट करने से नहीं चूकते। कई पुरुष सादगी भेष में तस्वीर रखते और महिलाओं के इनबॉक्स में अभद्रता पूर्ण शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। यदि सोशल मीडिया हमें देश-विदेश से जोड़ती है तो यही हमें आसपास से दूर भी कर रही है।आजकल घर परिवार में भी सभी इकट्ठे बैठकर बातें कम करते हैं। सोशल मीडिया पर अधिक व्यस्त रहते हैं।

निष्कर्ष

किसी भी देश का मूल्यांकन उसके देश के नागरिकों का चरित्र होता है चरित्र उज्जवल है तो देश का भविष्य उज्जवल है ।आओ हम सब मिलकर ऐसा प्रयास करें कि यदि सोशल मीडिया का उपयोग भी करें तो सोच-समझकर करें ।देश की अस्मिता दाँव पर ना लगाएँ। अपने पुराने आवरण को ध्यान में रखें और ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक सोच का फैलाव करें ।वह कहते हैं ,कि हम जैसा करेंगे वैसा भरेंगे ,तो क्यों ना समाज को सुंदर विचारों से ही भरें, तो कई गुना होकर वही वापस आएंगे। सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम है ,विचारों के आदान-प्रदान का ।इसके महत्व को समझें ,खुद भी तरक्की करें और देश की तरक्की में भी योगदान दें।

संदर्भ

1. http://rmindianews.com/?p=23610
2. https://hindi.sahityapedia.com/
3. डाक पता
4. सुरा कम्प्यूटर
5. दुकान न0 64–65, आदर्श कालोनी,
6. नजदीक एस.बी.आई. ए.टी.एम.
7. आजाद नगर, हिसार।